- डाइमेनाज़िन एस्चुरेट 0.८ -१.६ ग्राम /१०० किलो (मॉस में टीका) लगाये। या
- इसोमेटामेडियम हीड्रोक्लोरिडे दवाई का प्रयोग करें। या
- क्विनोप्ग्रामिन सलफेट और क्लोराइड ०.००२ मिलीलीटर / किलो (मॉस में दो से तीन जगह) लगाये।

4.अनप्लास्मोसिस

यह बीमारी अनप्लास्मा मार्जिनल का लाल रक्त कणो के टूटने के बजह से होती है ।जो की भूफिलस नामक चीचड़ के काटने से फैलती है।

बीमारी के लक्षण

- तेज बुखार होना (१०५°- १०६° फेरनेहिते)।
- पिलिआ होना।
- भूख न लगना और चुगाली नहीं करना ।
- पीले रंग का पेशाब आना।
- गोबर सुखा होना।
- तेज और मुश्किल से साँस लेना, तेज ह्रदय गति ।

बीमारी के जांच और इलाज / उपचार

- जानवर के शरीर पर चीचड़ होना।
- बीमारी के लक्षण दिखना ।
- रक्त / खून के जाँच में लाल रक्त कण में अनप्लास्मा मार्जिनल का मिलना ।
- खून में बिलिरुबिन का बढ़ना।

उपचार के लिए निकट सरकारी पशु चिकत्सालय में सम्पर्क करें :

- बुखार के लिए टेट्रासाइक्लिन 20-22 मिलीग्राम / किलो धीरे से खून की नाड़ी में नार्मल सेलाइन में सुबह शाम लगाये।
- लम्बे समय तक असर करने वाली ऑक्सीटेटरकीक्लिं / एनरोफ़्लॉक्सासिन - 30 मिलीलीटर (मॉस में दो जगह) लगाये और ७२ घंटों के बाद ६ टीकें लगाये।

बचाव

- चीचड़ रोग के बचाब के लिए जानवर के शरीर पर डेल्टामेथ्राने दवाई २-४ मिलीलीटर / लीटर पानी में ढाल कर लगाएं।
- जानवर के चमड़ी में अवेरमेक्टिन दवाई का टीका लगवाएं ।
- जानवर के आस-पास साफ़ सफाई रखें।
- जानवर के निवास स्थान में दरारों को भरें और डेल्टामेथ्राने दवाई १० मिलीलीटर / लीटर पानी में ढाल कर शिडकाव करें।

पूरी जानकरी के लिए Veterinary Medicine विभाग, FVSc & AH, SKUAST-J, R. S. Pura से सम्पर्क करे।
(Dr. Rajinder Bhardwaj & Dr. Rajiv Singh)

पशुओं में चीचड़ों से होने वाली बीमारियां और उनका उपचार

डिवीज़न ऑफ़ वेटरनरी मेडिसिन
शेरे-कश्मीर यूनिवर्सिटी ऑफ़ एग्रीकल्चरल, साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी,
आर एस पूरा , जम्मू

पछुओं में चीचड़ों का लगना आम बीमारी है । चीचड़ जानवरों का खून पीने के साथ साथ कई बीमारियां भी फैलाते है। जिससे जानवर में खून की मात्रा कम हो जाती है। और खून की मात्रा कम होने से कभी कभी जानवर की मौत भी हो जाती है।

जानवरों को चीचड़ों से होने वाली मुख्या बीमारियां :

1. बबेसिओसिस

यह बीमारी गाये, भैंसों और अन्य जानवरो की आम बीमारी है। जो की बुफ़िलस चीचड़ के काटने से होती है। यह बड़े जानवरों की बीमारी है।

बीमारी के लक्षण

- तेज बुखार होना (१०५°- १०६° फेरनेहिते)।
- भूख न लगना और चुगाली नहीं करना ।
- लाल या भूरे रंग का पेशाब आना।
- तेज और मुश्किल से साँस लेना, तेज ह्रदय गति और

कुछ जानवर में सिर को टकराना, चक्कर खाना और फिर गिर जाना ।

बीमारी के जांच और इलाज / उपचार

- जानवर के शरीर पर चीचड़ होना ।
- बीमारी के लक्षण दिखना।
- रक्त / खून के जाँच में लाल रक्त कण में बबेसिआ बाईजेमिना का मिलना।

उपचार के लिए निकट सरकारी पशु चिकत्सालय में सम्पर्क करें

- बुखार के लिए इंजेक्शन मेलोनेक्स लगाये।
-डाइमेनाज़िन एस्चुरेट 0.८ -१.६ ग्राम /१०० किलो (मॉस में टीका) लगाये।

2.थैलेरिओसिस

यह बीमारी गाये / विदेशी नस्ल के जानवरो में होती है । यह हिलोमा अनितोलिकम चीचड़ के काटने से फैलती है। यह बीमारी बरसात और गर्मी के महीने में अधिक होती है। यह बीमारी एक जानवर से दुसरे जानवर में इस्तेमाल की हुयी सिरिंज और सूई से फैलती है।

बीमारी के लक्षण

- तेज बुखार होना (१०५°- १०६° फेरनेहिते)।
- भूख न लगना और चुगाली नहीं करना ।
- आँखों व नाक से पानी आना।
- लिंफ़ नोड का सूजना।
- काले या लाल रंग का गोबर करना।
- तेज और मुश्किल से साँस लेना, तेज ह्रदय गति और

कुछ जानवर में सिर को टकराना, चक्कर खाना और फिर गिर जाना।

बीमारी के जांच और इलाज / उपचार

- जानवर के शरीर पर चीचड़ होना ।
- बीमारी के लक्षण दिखना ।
- रक्त / खून के जाँच में लाल रक्त कण में थेलिरिा अननुलता का मिलना
- लिम्फ नोड में कोच बालूऊओ कण मिलना।

उपचार के लिए निकट सरकारी पशु चिकत्सालय में सम्पर्क करें :

- बुखार के लिए इंजेक्शन मेलोनेक्स लगाये।
- टेट्रासाइक्लिन 20-22 मिलीग्राम / किलो धीरे से खून की नाड़ी में नार्मल सेलाइन में सुबह शाम लगाये।
- बुपरवाकुओने दवाई २.५ मिलीग्राम / किलो (मॉस में) लगाये।

3. ट्रीपनोसोमिऑसिस / सुर्रा

यह बीमारी घोड़ों, ऊंटों, गायों और भैंसों की बीमारी है जो की मक्खियों के काटने से फैलती है ।- यह बीमारी बीमार जानवर की इस्तेमाल की हुयी सिरिंज और सूई के दोबारा इस्तेमाल करने से भी फैलती है।

बीमारी के लक्षण

- यह बीमारी भयानक रूप में घोड़ो में आती है।
- बीच-बीच में बुखार का आना, कमजोरी होना, खून की कमी होना शरीर पर खून के धब्बे पड़ना और शरीर के नीचले भाग में सूजन होना।
- कुछ जानवरो में दिमागी लक्षण जैसे चक्कर आना, सिर का दिवार से टकराना।

बीमारी के जांच और इलाज / उपचार

- बीमारी के लक्षण दिखना ।
- खून की जाँच के ट्रीपनोसोमा एवंसी का पाया जाना।
- खून में ग्लूकोस की मात्रा का कम होना।

उपचार के लिए निकट सरकारी पशु चिकत्सालय में सम्पर्क करें :

- बुखार के लिए इंजेक्शन मेलोनेक्स लगाये।
- ग्लूकोस इंजेक्शन लगाये।